॥ श्रीः ॥

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजीविरचित

# श्रीरामचरितमानस

[ मूल-मझली साइज ]

( सचित्र )



गीताप्रेस, गोरखपुर

प्रकाशक
मोतीलाल जालान
गीताप्रेस, गोरखपुर

संस्करण

| | | | |
|---|---|---|---|
| सं० | १९९९ से २०३७ तक | | १२,८१,२५० |
| सं० | २०३८ | इकतीसवाँ संस्करण | ५०,००० |
| सं० | २०३८ | बत्तीसवाँ संस्करण | ५०,००० |
| सं० | २०३८ | तैंतीसवाँ संस्करण | ५०,००० |
| सं० | २०३८ | चौंतीसवाँ संस्करण | २५,००० |
| | | कुल | १४,५६,२५० |

(चौदह लाख छप्पन हजार दो सौ पचास)

मूल्य पांच रुपये

[भारत सरकार द्वारा उपलब्ध कराये गये रियायती मूल्य के कागज पर मुद्रित]

पता—गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

मुद्रक—प्रकाश पैकेजर्स, २५७-गोलागंज, लखनऊ

॥ श्रीहरिः ॥

# प्रथम संस्करणका निवेदन

गीताप्रेससे श्रीरामचरितमानसका एक सटीक एवं सचित्र संस्करण कुछ अन्य उपयोगी सामग्रीके साथ 'कल्याण' के विशेषाङ्कके रूपमें तेरहवें वर्षके प्रारम्भमें निकल चुका है । उसमें बहुत-सी त्रुटियाँ होनेपर भी मानसप्रेमी जनताने उसका कितना आदर किया, यह सब लोगोंको विदित ही है । मानसाङ्क निकालते समय यह विचार था और उसे सम्पादकीय निवेदनमें व्यक्त भी कर दिया गया था कि इसके बाद जल्दी ही मानसका एक मूल संस्करण मोटे अक्षरोंमें अलग निकाला जाय, जिसमें पाठभेद आदि दिये जायँ तथा आवश्यक टिप्पणियाँ भी रहें और उसके बाद उसीके आधारपर मूल तथा सटीक, छोटे-बड़े कई संस्करण निकाले जायँ। परंतु इच्छा रहनेपर भी कई कारणोंसे यह संस्करण जल्दी नहीं निकल सका । पहले तो यह आशा थी कि भगवान्‌की कृपासे सम्भवतः कहींसे गोस्वामीजीके हाथकी लिखी हुई कोई पूरी प्रामाणिक प्रति मिल जाय; जिससे शुद्ध-से-शुद्ध पाठ मानसप्रेमियोंके पास पहुँचाया जा सके; परंतु जब यह आशा जल्दी पूरी होती नहीं देखी गयी तो मानसाङ्कके पाठको ही एक बार फिरसे देखकर तथा मानसके कतिपय मर्मज्ञोंका परामर्श लेकर उसीमें आवश्यकतानुसार यत्र-तत्र कुछ संशोधन करके छपनेको दे दिया गया ।

अभी वह संस्करण छप ही नहीं पाया था कि कई मित्रोंका यह अनुरोध हुआ कि नवीन संवत्सरारम्भके पहले ही श्रीरामचरितमानसका एक गुटका बहुत शीघ्र छापकर तैयार किया जाय, जिसमें नवरात्रमें होनेवाले मानसपारायणके लिये ( जिसकी सूचना कई माससे 'कल्याण' में छापी जा रही थी ) मानसप्रेमियोंको एक पाठोपयोगी छोटा एवं सस्ता संस्करण मिल जाय। इसलिये जो उतना बड़ा मानसाङ्क नहीं खरीद सकते उनकी सुविधाके लिये वह गुटका छापा गया। जनताने उसका बहुत अधिक आदर किया । लगभग दो ही वर्षमें उसकी एक लाख तीस हजार प्रतियाँ छप गयीं ।

इसी बीचमें पाठभेदवाला मूल-मोटे टाइपका संस्करण भी छपकर तैयार हो गया। परंतु उसमें मानस-व्याकरण, भूमिका और प्राचीन प्रतियोंके अनेक पाठभेद रहनेसे तथा बहुत मोटे टाइप होनेके क

मूल्य ३।।) रखना पड़ा। इसलिये सर्वसाधारण लोगोंको उसे खरीदनेमें कठिनाई पड़ती है, इधर गुटकाके टाइप बहुत छोटे होनेसे बहुत-से लोगोंको उसे पढ़नेमें असुविधा रहती है, इसलिये अनेक सज्जनोंने यह आग्रह किया कि एक ऐसा संस्करण निकाला जाय जिसमें टाइप भी कुछ बड़े हों और दाम भी ठीक-ठीक हों। यद्यपि वर्तमान महायुद्धकी विकट परिस्थितिके कारण कागज, स्याही आदि के दाम अत्यधिक बढ़ जानेसे इस समय यह संस्करण निकालना बहुत कठिन था, किंतु फिर भी लोगोंके लगातार आग्रहके कारण किसी प्रकार यह छापकर तैयार किया गया है, जो मानस-प्रेमी पाठकोंके सम्मुख प्रस्तुत है।

यों तो हमारा सारा ही प्रयास भूलोंसे भरा है। पूज्य गोस्वामीजीके हाथकी लिखी हुई कोई पूरी प्रामाणिक प्रति प्रयास करनेपर भी न मिल सकनेके कारण शुद्ध पाठका दावा तो हमलोग कर ही नहीं सकते; इसके अतिरिक्त अपनी समझसे पूरी सावधानी बरती जानेपर भी—इसमें प्रूफ आदिकी भूलें रह गयी हों तो कोई आश्चर्य नहीं है। आशा है कृपालु पाठक हमारी कठिनाइयोंको समझकर इसके लिये हमें क्षमा करेंगे। पाठके सम्बन्धमें हमें इतना ही निवेदन करना है कि जो कुछ सामग्री हमें प्राप्त हो सकी, उसका हमलोगोंने अपनी समझसे ईमानदारीके साथ उपयोग किया है। प्रूफ आदिकी भूलें यदि कुछ रही हों तो वे अगले संस्करणोंमें सुधारी जा सकती हैं।

पाठके सम्बन्धमें हमें पूज्यपाद परमहंस श्रीअवधविहारीदासजी महाराज (नागाबाबा), पूज्य पं० श्रीविजयानन्दजी त्रिपाठी तथा पूज्य पं० श्रीजयरामदासजी 'दीन' रामायणीसे बहुमूल्य परामर्श प्राप्त हुए। इसके लिये हम उनके हृदयसे कृतज्ञ हैं। पाठके निर्णयमें हमें 'मानसपीयूष' से तथा उसके सम्पादक महात्मा श्रीअंजनीनन्दनशरण शीतलासहायजीसे भी काफी सहायता मिली है, जिसके लिये हम उनके भी विशेष कृतज्ञ हैं।

अन्तमें हम सब लोगोंसे अपनी त्रुटियों के लिये क्षमा मांगते हैं और भगवान्‌की वस्तु भगवान्‌को ही समर्पित करते हैं।

नृसिंहजयन्ती, सं० १९९९ वि० ]

—प्रकाशक

॥ श्रीहरिः ॥

## श्रीरामचरितमानसकी संक्षिप्त

# विषय-सूची

॥ श्रीहरिः ॥

# पारायण-विधि

श्रीरामचरितमानसका विधिपूर्वक पाठ करनेवाले महानुभावोंको पाठारम्भके पूर्व श्रीतुलसीदासजी, श्रीवाल्मीकिजी, श्रीशिवजी तथा श्रीहनुमान्‌जीका आवाहन-पूजन करनेके पश्चात् तीनों भाइयोंसहित श्रीसीतारामजीका आवाहन, षोडशोपचार पूजन और ध्यान करना चाहिये। तदनन्तर पाठका आरम्भ करना चाहिये। सबके आवाहन, पूजन और ध्यानके मन्त्र क्रमशः नीचे लिखे जाते हैं—

## अथ आवाहनमन्त्रः

तुलसीक नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुचिव्रत। नैर्ऋत्य उपविश्येदं पूजनं प्रतिगृह्यताम्॥ ॐ तुलसीदासाय नमः॥ १॥ श्रीवाल्मीक नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभप्रद। उत्तरपूर्वयोर्मध्ये तिष्ठ गृह्णीष्व मेऽर्चनम्॥ ॐ वाल्मीकाय नमः॥ २॥ गौरीपते नमस्तुभ्यमिहागच्छ महेश्वर। पूर्वदक्षिणयोर्मध्ये तिष्ठ पूजां गृहाण मे॥ ॐ गौरीपतये नमः॥ ३॥ श्रीलक्ष्मण नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः। याम्यभागे समातिष्ठ पूजनं संगृहाण मे॥ ॐ श्रीसपत्नीकाय लक्ष्मणाय नमः॥ ४॥ श्रीशत्रुघ्न नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः। पीठस्य पश्चिमे भागे पूजनं स्वीकुरुष्व मे॥ ॐ श्रीसपत्नीकाय शत्रुघ्नाय नमः॥ ५॥ श्रीभरत नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः। पीठकस्योत्तरे भागे तिष्ठ पूजां गृहाण मे॥ ॐ श्रीसपत्नीकाय भरताय नमः॥ ६॥ श्रीहनुमन्नमस्तुभ्यमिहागच्छ कृपानिधे। पूर्वभागे समातिष्ठ पूजनं स्वीकुरु प्रभो॥ ॐ हनुमते नमः॥ ७॥

अथ प्रधानपूजा च कर्तव्या विधिपूर्वकम्।
पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा तु ध्यानं कुर्यात्परस्य च॥ ८॥
रक्ताम्भोजदलाभिरामनयनं पीताम्बरालंकृतं
श्यामाङ्गं द्विभुजं प्रसन्नवदनं श्रीसीतया शोभितम्।

मामभिरक्षय रघुकुलनायक। धृत बर चाप रुचिर कर सायक॥
करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः
इति करन्यासः।

## अथ हृदयादिन्यासः

जग मंगल गुनग्राम राम के। दानि मुकुति धन धरम धामके॥
हृदयाय नमः।
राम राम कहि जे जमुहाहीं। तिन्हहि न पापपुंज समुहाहीं॥
शिरसे स्वाहा।
राम सकल नामन्ह ते अधिका। होउ नाथ अघ खग गन बधिका॥
शिखायै वषट्।
उमा दारु जोषित की नाईं। सबहि नचावत रामु गोसाईं॥
कवचाय हुम्।
सन्मुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं॥
नेत्राभ्यां वौषट्।
मामभिरक्षय रघुकुलनायक। धृत बर चाप रुचिर कर सायक॥
अस्त्राय फट्। इति हृदयादिन्यासः

## अथ ध्यानम्

मामवलोकय पंकजलोचन। कृपा बिलोकनि सोच बिमोचन॥
नील तामरस स्याम काम अरि। हृदय कंज मकरंद मधुप हरि॥
जातुधान बरूथ बल भंजन। मुनि सज्जन रंजन अघ गंजन॥
भूसुर ससि नव बृंद बलाहक। असरन सरन दीन जन गाहक॥
भुजबल बिपुल भार महि खंडित। खर दूषन बिराध बध पंडित॥
रावनारि सुखरूप भूपबर। जय दसरथ कुल कुमुद सुधाकर॥
सुजस पुरान बिदित निगमागम। गावत सुर मुनि संत समागम॥
कारुनीक ब्यलीक मद खंडन। सब बिधि कुसल कोसला मंडन॥
कलि मल मथन नाम ममताहन। तुलसिदास प्रभु पाहि प्रनत जन॥
इति ध्यानम्

## नवाह्नपारायणके विश्राम-स्थान



## मासपारायणके विश्राम-स्थान

# श्रीरामशलाका प्रश्नावली

मानसानुरागी महानुभावोंको श्रीरामशलाका प्रश्नावलीका विशेष परिचय देनेकी कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती, उसकी महत्ता एवं उपयोगितासे प्रायः सभी मानसप्रेमी परिचित होंगे। अतः नीचे उसका स्वरूपमात्र अङ्कित करके उससे प्रश्नोत्तर निकालनेकी विधि तथा उसके उत्तर-फलोंका उल्लेख कर दिया जाता है। श्रीरामशलाका प्रश्नावलीका स्वरूप इस प्रकार है—

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सु | प्र | उ | बि | हो | मु | ग | ब | सु | नु | बि | घ | धि | इ | द |
| र | रु | फ | सि | सि | रैं | बस | है | मं | ल | न | ल | य | न | अं |
| सुज | सो | ग | सु | कु | म | स | ग | त | न | ई | ल | धा | बे | नो |
| त्य | र | न | कु | जो | म | रि | र | र | अ | की | हो | सं | रा | य |
| पु | सु | थ | सी | जे | इ | ग | म्म | सं | क | रे | हो | स | स | नि |
| त | र | थ | र | स | हु | ह | ब | ब | प | चि | स | हि | स | तु |
| म | का | ा | र | र | मा | मि | मी | म्हा | ा | जा | हू | हीं | ा | जू |
| ता | रा | रे | री | ह्र | का | फ | खा | जि | ई | र | रा | पू | द | ल |
| नि | को | मि | गो | न | म | ज | य | ने | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| हि | रा | य | स | रि | ग | द | न | ष | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| सिं | मु | न | न | कौ | मि | ज | र | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| गु | क | म | अ | ध | नि | म | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| ना | पु | व | अ | ढा | र | ल | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| सि | ह | सु | म्ह | रा | र | स | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| र | सा | ा | ला | धी | ा | री | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

इस रामशलाका [illegible]
अपने अभीष्ट प्रश्नका [illegible]
उस व्यक्तिको [illegible]
तदनन्तर श्रद्धा[illegible]

प्रश्नावलीके मनचाहे कोष्ठकमें अँगुली या कोई शलाका रख देना चाहिये और उस कोष्ठकमें जो अक्षर हो उसे अलग किसी कोरे कागज या स्लेटपर लिख लेना चाहिये। प्रश्नावलीके कोष्ठकपर भी ऐसा कोई निशान लगा देना चाहिये। जिससे न तो प्रश्नावली गंदी हो और न प्रश्नोत्तर प्राप्त होनेतक वह कोष्ठक भूल जाय। अब जिस कोष्ठकका अक्षर लिख लिया गया है उससे आगे बढ़ना चाहिये तथा उसके नवें कोष्ठकमें जो अक्षर पड़े उसे भी लिख लेना चाहिये। इस प्रकार प्रति नवें अक्षरके नवें अक्षरको क्रमसे लिखते जाना चाहिये और तबतक लिखते जाना चाहिये, जबतक उसी पहले कोष्ठकके अक्षरतक अँगुली अथवा शलाका न पहुँच जाय। पहले कोष्ठकका अक्षर जिस कोष्ठकके अक्षरसे नवाँ पड़ेगा, वहाँतक पहुँचते-पहुँचते एक चौपाई पूरी हो जायगी, जो प्रश्नकर्ताके अभीष्ट प्रश्नका उत्तर होगी। यहाँ इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि किसी-किसी कोष्ठकमें केवल 'आ' की मात्रा ( ा ) और किसी-किसी कोष्ठकमें दो-दो अक्षर हैं। अतः गिनते समय न तो मात्रावाले कोष्ठकको छोड़ देना चाहिये और न दो अक्षरोंवाले कोष्ठकको दो बार गिनना चाहिये। जहाँ मात्राका कोष्ठक आवे वहाँ पूर्वलिखित अक्षरके आगे मात्रा लिख लेना चाहिये और जहाँ दो अक्षरोंवाला कोष्ठक आवे वहाँ दोनों अक्षर एक साथ लिख लेना चाहिये।

अब उदाहरणके तौरपर इस रामशलाका प्रश्नावलीसे किसी प्रश्नके उत्तरमें एक चौपाई निकाल दी जाती है। पाठक ध्यानसे देखें। किसीने भगवान् श्रीरामचन्द्रजीका ध्यान और अपने प्रश्नका

चिन्तन करते हुए यदि प्रश्नावलीके*इस चिह्नसे संयुक्त 'म' वाले कोष्ठकमें अँगुली या शलाका रक्खा और वह ऊपर बताये क्रमके अनुसार अक्षरोंको गिन-गिनकर लिखता गया तो उत्तरस्वरूप यह चौपाई बन जायगी—

हो इ है सो ई जो राम * र चि रा खा ।
को क रि त र क ब ढ़ा व हिं सा खा ॥

यह चौपाई बालकाण्डान्तर्गत शिव और पार्वतीके संवादमें है। प्रश्नकर्ताको इस उत्तरस्वरूप चौपाईसे यह आशय निकालना चाहिये कि कार्य होनेमें सन्देह है, अतः उसे भगवान्पर छोड़ देना श्रेयस्कर है।

इस चौपाईके अतिरिक्त *श्रीरामशलाका प्रश्नावलीसे* और भी जितनी चौपाइयाँ बनती हैं, उन सबका स्थान और फलसहित उल्लेख नीचे किया जाता है।

१–सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी ॥

**स्थान**–यह चौपाई बालकाण्डमें श्रीसीताजीके गौरीपूजनके प्रसङ्गमें है। गौरीजीने श्रीसीताजीको आशीर्वाद दिया है।

**फल**–प्रश्नकर्ताका *प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा।*

२–प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा ॥

**स्थान**–यह चौपाई सुन्दरकाण्डमें हनुमान्‌जीके लंकामें प्रवेश करनेके समयकी है।

**फल**–भगवान्‌का स्मरण करके कार्यारम्भ करो, सफलता मिलेगी।

३–उघरें अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू ॥

**स्थान**–यह चौपाई बालकाण्डके आरम्भमें सत्सङ्ग

**फल**–इस कार्यमें भलाई नहीं है। कार्यकी सफ

४-विधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं॥

स्थान-यह चौपाई भी वालकाण्डके आरम्भमें ही सत्सङ्गवर्णनके प्रसङ्गकी है।

फल-खोटे मनुष्योंका सङ्ग छोड़ दो। कार्य पूर्ण होनेमें सन्देह है।

५-मुद मंगलमय संत समाजू। जिमि जग जंगम तीरथ राजू॥

स्थान-यह चौपाई वालकाण्डमें संत-समाजरूपी तीर्थके वर्णनमें है।

फल-प्रश्न उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

६-गरल सुधा रिपु करय मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई॥

स्थान-यह चौपाई श्रीहनुमान्‌जीके लंकामें प्रवेश करनेके समयकी है।

फल-प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है। कार्य सफल होगा।

७-बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सनमुख धरि काह न धीरा॥

स्थान-यह चौपाई लंकाकाण्डमें रावणकी मृत्युके पश्चात् मन्दोदरीके विलापके प्रसङ्गमें है।

फल-कार्य पूर्ण होनेमें सन्देह है।

८-सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे॥

स्थान-यह चौपाई वालकाण्डमें पुष्पवाटिकासे पुष्प लानेपर विश्वामित्रजीका आशीर्वाद है।

फल-प्रश्न बहुत उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

इस प्रकार रामशलाका प्रश्नावलीसे कुल नौ चौपाइयाँ बनती हैं, जिनमें सभी प्रकारके प्रश्नोंके उत्तराशय सन्निहित हैं।

॥ श्रीरामाय नमः ॥

# श्रीरामचरितमानस

## बालकाण्ड



गीताप्रेस, गोरखपुर

४–विधि यस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं॥

स्थान–यह चौपाई भी वालकाण्डके आरम्भमें ही सत्सङ्गवर्णनके प्रसङ्गकी है।

फल–खोटे मनुष्योंका सङ्ग छोड़ दो। कार्य पूर्ण होनेमें सन्देह है।

५–मुद मंगलमय संत समाजू। जिमि जग जंगम तीरथ राजू॥

स्थान–यह चौपाई वालकाण्डमें संत-समाजरूपी तीर्थके वर्णनमें है।

फल–प्रश्न उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

६–गरल सुधा रिपु करय मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई॥

स्थान–यह चौपाई श्रीहनुमान्‌जीके लंकामें प्रवेश करनेके समयकी है।

फल–प्रश्न वहुत श्रेष्ठ है। कार्य सफल होगा।

७–वरुन कुवेर सुरेस समीरा। रन सनमुख धरि काहु न धीरा॥

स्थान–यह चौपाई लंकाकाण्डमें रावणकी मृत्युके पश्चात् मन्दोदरीके विलापके प्रसङ्गमें है।

फल–कार्य पूर्ण होनेमें सन्देह है।

८–सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे॥

स्थान–यह चौपाई वालकाण्डमें पुष्पवाटिकासे पुष्प लानेपर विश्वामित्रजीका आशीर्वाद है।

फल–प्रश्न वहुत उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

इस प्रकार रामशलाका प्रश्नावलीसे कुल नौ चौपाइयाँ वनती हैं, जिनमें सभी प्रकारके प्रश्नोंके उत्तराशय सन्निहित हैं।

॥ श्रीरामाय नमः ॥

# श्रीरामचरितमानस

## वालकाण्ड



गीताप्रेस, गोरखपुर

मायामुक्त नारदजी



तब मुनि अति सभीत हरि चरना ।
गहे पाहि प्रनतारति हरना ॥



श्रीरामकी झाँकी

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

# श्रीरामचरितमानस

## प्रथम सोपान

### ( बालकाण्ड )

श्लोक

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि ।
मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥
भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥ २ ॥
वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥ ३ ॥
सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ।

दो०–जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखत सैल बन भूतल भूरि निधान ॥ १ ॥

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन । नयन अमिअ दृग दोष बिभंजन ॥
तेहिं करि बिमल बिबेक बिलोचन । बरनउँ राम चरित भव मोचन ॥
बंदउँ प्रथम महीसुर चरना । मोह जनित संसय सब हरना ॥
सुजन समाज सकल गुन खानी । करउँ प्रनाम सप्रेम सुबानी ॥
साधु चरित सुभ चरित कपासू । निरस बिसद गुनमय फल जासू ॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा । बंदनीय जेहिं जग जस पावा ॥
मुद मंगलमय संत समाजू । जो जग जंगम तीरथराजू ॥
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा । सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा ॥
बिधि निषेधमय कलि मल हरनी । करम कथा रबिनंदनि बरनी ॥
हरि हर कथा बिराजति बेनी । सुनत सकल मुद मंगल देनी ॥
बटु बिस्वास अचल निज धरमा । तीरथराज समाज सुकरमा ॥
सबहि सुलभ सब दिन सब देसा । सेवत सादर समन कलेसा ॥
अकथ अलौकिक तीरथराऊ । देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ ॥

दो०–सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग ।
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग ॥ २ ॥

मज्जन फल पेखिअ ततकाला । काक होहिं पिक बकउ मराला ॥
सुनि आचरज करै जनि कोई । सतसंगति महिमा नहिं गोई ॥
बालमीक नारद घटजोनी । निज निज मुखनि कही निज होनी
जलचर थलचर नभचर नाना । जे जड़ चेतन जीव जहाना ॥
मति कीरति गति भूति भलाई । जब जेहिं जतन जहाँ जेहिं पाई ॥

सो जानब सतसंग प्रभाऊ। लोकहुँ बेद न आन उपाऊ॥
बिनु सतसंग बिबेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई॥
सतसंगत मुद मंगल मूला। सोइ फल सिधि सब साधन फूला
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधात सुहाई॥
बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं
बिधि हरि हर कबि कोबिद बानी। कहत साधु महिमा सकुचानी॥
सो मो सन कहि जात न कैसें। साक बनिक मनि गुन गन जैसें॥

दो०—बंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोइ॥ ३ (क)॥
संत सरल चित जगत हित जानि सुभाउ सनेहु।
बालबिनय सुनि करि कृपा राम चरन रति देहु॥ ३ (ख)॥

बहुरि बंदि खल गन सतिभाएँ। जे बिनु काज दाहिनेहु बाएँ॥
पर हित हानि लाभ जिन्ह केरें। उजरें हरष बिषाद बसेरें॥
हरि हर जस राकेस राहु से। पर अकाज भट सहसबाहु से॥
जे पर दोष लखहिं सहसाखी। पर हित घृत जिन्ह के मन माखी
तेज कृसानु रोष महिषेसा। अघ अवगुन धन धनी धनेसा॥
उदय केत सम हित सबही के। कुंभकरन सम सोवत नीके॥
पर अकाजु लगि तनु परिहरहीं। जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं
बंदउँ खल जस सेष सरोषा। सहस बदन बरनइ पर दोषा॥
पुनि प्रनवउँ पृथुराज समाना। पर अघ सुनइ सहस दस काना॥
बहुरि सक्र सम बिनवउँ तेही। संतत सुरानीक हित जेही॥
बचन बज्र जेहि सदा पिआरा। सहस नयन पर दोष निहारा॥

दो०–उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति ।
जानि पानि जुग जोरि जन बिनती करइ सप्रीति ॥ ४ ॥

मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा। तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा
बायस पलिअहिं अति अनुरागा। होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा
बंदउँ संत असज्जन चरना। दुखप्रद उभय बीच कछु बरना॥
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं। मिलत एक दुख दारुन देहीं॥
उपजहिं एक संग जग माहीं। जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं
सुधा सुरा सम साधु असाधू। जनक एक जग जलधि अगाधू॥
भल अनभल निज निज करतूती। लहत सुजस अपलोक बिभूती॥
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू। गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू
गुन अवगुन जानत सब कोई। जो जेहि भाव नीक तेहि सोई॥

दो०–भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु ।
सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु ॥ ५ ॥

खल अघ अगुन साधु गुन गाहा। उभय अपार उदधि अवगाहा॥
तेहि तें कछु गुन दोष बखाने। संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने॥
भलेउ पोच सब बिधि उपजाए। गनि गुन दोष बेद बिलगाए॥
कहहिं बेद इतिहास पुराना। बिधि प्रपंचु गुन अवगुन साना॥
दुख सुख पाप पुन्य दिन राती। साधु असाधु सुजाति कुजाती॥
दानव देव ऊँच अरु नीचू। अमिअ सुजीवनु माहुरु मीचू॥
माया ब्रह्म जीव जगदीसा। लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा॥
कासी मग सुरसरि क्रमनासा। मरु मारव महिदेव गवासा॥
सरग नरक अनुराग बिरागा। निगमागम गुन दोष बिभागा॥

दो०—जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार ॥ ६ ॥

अस बिबेक जब देइ बिधाता। तब तजि दोष गुनहिं मनु राता ॥
काल सुभाउ करम बरिआईं। भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाईं ॥
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं। दलि दुख दोष बिमल जसु देहीं॥
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू। मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू ॥
लखि सुबेष जग बंचक जेऊ। बेष प्रताप पूजिअहिं तेऊ॥
उघरहिं अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू ॥
किएहुँ कुबेषु साधु सनमानू। जिमि जग जामवंत हनुमानू॥
हानि कुसंग सुसंगति लाहू। लोकहुँ बेद बिदित सब काहू ॥
गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा। कीचहिं मिलइ नीच जल संगा ॥
साधु असाधु सदन सुक सारीं। सुमिरहिं राम देहिं गनि गारीं ॥
धूम कुसंगति कारिख होई। लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई ॥
सोइ जल अनल अनिल संघाता। होइ जलद जग जीवन दाता ॥

दो०—ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग ॥ ७ (क) ॥
सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद बिधि कीन्ह।
ससि सोषक पोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह ॥ ७ (ख) ॥
जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि ॥ ७ (ग) ॥
देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्ब।
बंदउँ किंनर रजनिचर कृपा करहु अब सर्ब ॥ ७ (घ) ॥

आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ बासी॥
सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥
जानि कृपाकर किंकर मोहू। सब मिलि करहु छाड़ि छल छोहू
निज बुधि बल भरोस मोहि नाहीं। तातें बिनय करउँ सब पाहीं॥
करन चहउँ रघुपति गुन गाहा। लघु मति मोरि चरित अवगाहा॥
सूझ न एकउ अंग उपाऊ। मन मति रंक मनोरथ राऊ॥
मति अति नीच ऊँचि रुचि आछी। चहिअ अमिअ जग जुरइ न छाछी
छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई। सुनिहहिं बालबचन मन लाई॥
जौं बालक कह तोतरि बाता। सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता
हँसिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी। जे पर दूषन भूषनधारी॥
निज कवित्त केहि लाग न नीका। सरस होउ अथवा अति फीका॥
जे पर भनिति सुनत हरपाहीं। ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं॥
जग बहु नर सर सरि सम भाई। जे निज बाढ़ि बढ़हिं जल पाई॥
सज्जन सकृत सिंधु सम कोई। देखि पूर बिधु बाढ़इ जोई॥

दो०—भाग छोट अभिलाषु बड़ करउँ एक बिस्वास।
पैहहिं सुख सुनि सुजन सब खल करिहहिं उपहास॥ ८॥

खल परिहास होइ हित मोरा। काक कहहिं कलकंठ कठोरा॥
हंसहि बक दादुर चातकही। हँसहिं मलिन खल बिमल बतकही
कबित रसिक न राम पद नेहू। तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू॥
भाषा भनिति भोरि मति मोरी। हँसिबे जोग हँसें नहिं खोरी॥
प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी। तिन्हहि कथा सुनि लागिहि फीकी

दो०—प्रिय लागिहि अति सबहि मम भनिति राम जस-संग ।
दारु बिचारु कि करइ कोउ बंदिअ मलय प्रसंग ॥१०(क)॥
स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनद करहिं सब पान ।
गिरा ग्राम्य सिय राम जस गावहिं सुनहिं सुजान ॥१०(ख)॥

मनि मानिक मुकुता छबि जैसी। अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी॥
नृप किरीट तरुनी तनु पाई। लहहिं सकल सोभा अधिकाई॥
तैसेहिं सुकबि कबित बुध कहहीं। उपजहिं अनत अनत छबि लहहीं॥
भगति हेतु बिधि भवन बिहाई। सुमिरत सारद आवति धाई॥
राम चरित सर बिनु अन्हवाएँ। सो श्रम जाइ न कोटि उपाएँ॥
कबि कोबिद अस हृदयँ बिचारी। गावहिं हरि जस कलि मल हारी॥
कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना। सिर धुनि गिरा लगत पछिताना॥
हृदय सिंधु मति सीप समाना। स्वाति सारदा कहहिं सुजाना॥
जौं बरषइ बर बारि बिचारू। होहिं कबित मुकुतामनि चारू॥

दो०—जुगुति बेधि पुनि पोहिअहिं राम चरित बर ताग ।
पहिरहिं सज्जन बिमल उर सोभा अति अनुराग ॥११॥

जे जनमे कलिकाल कराला। करतब बायस बेष मराला॥
चलत कुपंथ बेद मग छाँड़े। कपट कलेवर कलि मल भाँड़े॥
बंचक भगत कहाइ राम के। किंकर कंचन कोह काम के॥
तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी। धींग धरमध्वज धंधक धोरी॥
जौं अपने अवगुन सब कहऊँ। बाढ़इ कथा पार नहिं लहऊँ॥
ताते मैं अति अलप बखाने। थोरे महुँ जानिहहिं सयाने॥
समुझि बिबिधि बिधि बिनती मोरी। कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी॥

एतेहु पर करिहहिं जे असंका। मोहि ते अधिक ते जड़ मति रंका
कवि न होउँ नहिं चतुर कहावउँ। मति अनुरूप राम गुन गावउँ॥
कहँ रघुपति के चरित अपारा। कहँ मति मोरि निरत संसारा॥
जेहिं मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं। कहहु तूल केहि लेखे माहीं॥
समुझत अमित राम प्रभुताई। करत कथा मन अति कदराई॥

दो०—सारद सेस महेस विधि आगम निगम पुरान।
नेति नेति कहि जासु गुन करहिं निरंतर गान॥१२॥

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई। तदपि कहें बिनु रहा न कोई॥
तहाँ वेद अस कारन राखा। भजन प्रभाउ भाँति बहु भाषा॥
एक अनीह अरूप अनामा। अज सच्चिदानंद पर धामा॥
ब्यापक बिस्वरूप भगवाना। तेहिं धरि देह चरित कृत नाना॥
सो केवल भगतन हित लागी। परम कृपाल प्रनत अनुरागी॥
जेहि जन पर ममता अति छोहू। जेहिं करुना करि कीन्ह न कोहू॥
गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू॥
बुध बरनहिं हरि जस अस जानी। करहिं पुनीत सुफल निज बानी॥
तेहिं बल मैं रघुपति गुन गाथा। कहिहउँ नाइ राम पद माथा॥
मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई। तेहिं मग चलत सुगम मोहि भाई

दो०—अति अपार जे सरित बर जौं नृप सेतु कराहिं।
चढ़ि पिपीलिकउ परम लघु बिनु श्रम पारहि जाहिं॥१३॥

एहि प्रकार बल मनहि देखाई। करिहउँ रघुपति कथा सुहाई॥
ब्यास आदि कबि पुंगव नाना। जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना॥
चरन कमल बंदउँ तिन्ह केरे। पुरवहुँ सकल मनोरथ मेरे॥

कलि के कबिन्ह करउँ परनामा। जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा॥
जे प्राकृत कबि परम सयाने। भाषाँ जिन्ह हरि चरित बखाने॥
भए जे अहहिं जे होइहहिं आगें। प्रनवउँ सबहि कपट सब त्यागें॥
होहु प्रसन्न देहु बरदानू। साधु समाज भनिति सनमानू॥
जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं। सो श्रम बादि बाल कबि करहीं॥
कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥
राम सुकीरति भनिति भदेसा। असमंजस अस मोहि अँदेसा॥
तुम्हरी कृपाँ सुलभ सोउ मोरे। सिअनि सुहावनि टाट पटोरे॥

दो०—सरल कबित कीरति बिमल सोइ आदरहिं सुजान।
सहज बयर बिसराइ रिपु जो सुनि करहिं बखान॥१४(क)॥
सो न होइ बिनु बिमल मति मोहि मति बल अति थोर।
करहु कृपा हरि जस कहउँ पुनि पुनि करउँ निहोर॥१४(ख)॥
कबि कोबिद रघुबर चरित मानस मंजु मराल।
बालबिनय सुनि सुरुचि लखि मो पर होहु कृपाल॥१४(ग)॥

सो०—बंदउँ मुनि पद कंजु रामायन जेहिं निरमयउ।
सखर सुकोमल मंजु दोष रहित दूषन सहित॥१४(घ)॥
बंदउँ चारिउ बेद भव बारिधि बोहित सरिस।
जिन्हहि न सपनेहुँ खेद बरनत रघुबर बिसद जसु॥१४(ङ)॥
बंदउँ बिधि पद रेनु भव सागर जेहिं कीन्ह जहँ।
संत सुधा ससि धेनु प्रगटे खल बिष बारुनी॥१४(च)॥

दो०—बिबुध बिप्र बुध ग्रह चरन बंदि कहउँ कर जोरि।
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि॥१४(छ)॥

पुनि बंदउँ सारद सुरसरिता। जुगल पुनीत मनोहर चरिता॥